।। ओ३म् ।।

आर्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष - 94 अंक 12 पृष्ठ 16 मूल्य ₹ 5/- मार्च द्वितीय 21 मार्च से 5 अप्रैल 2020

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सर
की हार्दिक शुभकामनाएँ

प्रतिनिधि गतिविधि

आर्य समाज बयाना का निरीक्षण करता प्रतिनिधि मण्डल

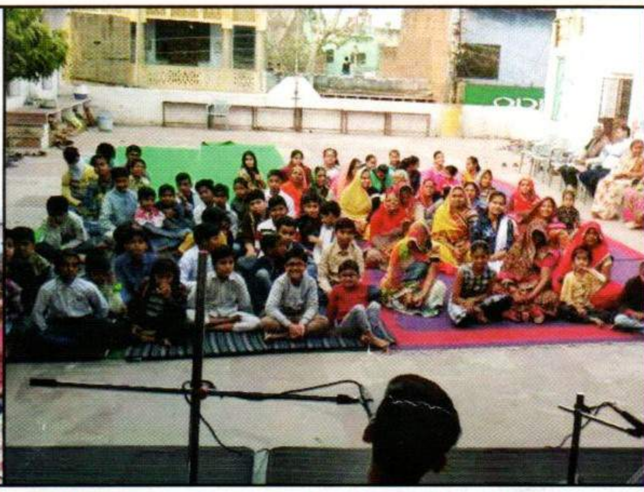

ऋषि बोधोत्सव कार्यक्रम पर आर्यसमाज बयाना में उपस्थित जनसमूह

आर्य समाज कोटपूतली में यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति

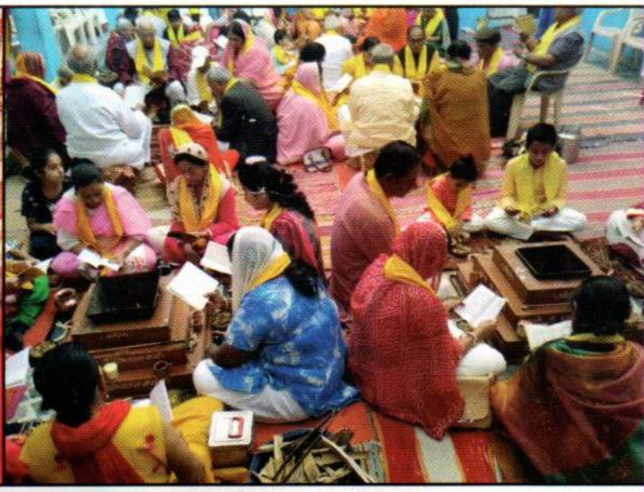

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर में सप्त कुण्डीय यज्ञ की पूर्णाहुति

आर्य समाज दौसा में बोध दिवस पर हवन करते हुए आर्यजन

आर्य समाज शाहपुरा ने राहगीरों को पिलाया आयुर्वेदिक काढ़ा

ओ३म्

आर्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

द्वादशी, कृष्ण पक्ष विक्रम सम्वत् 2076, कलि सम्वत् 5120, दयानन्दाब्द 195, सृष्टि सम्वत् 01,96,08,53,120

आर. एन. आई नं.10471/60

संरक्षक

1. महाशय धर्मपाल जी (एम. डी. एच.)
2. श्री रमेश गुप्ता (आर्य), अमेरिका
3. श्री दीनदयाल जी गुप्त (डॉलर बनियान)

प्रेरणा स्रोत

1. श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
2. श्री विजय सिंह भाटी
3. श्री जगदीश प्रसाद आर्य
4. श्री मदनमोहन आर्य

संपादक

श्री देवेन्द्र कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

1. आचार्य रविशंकर आर्य
2. डॉ. सन्दीपन आर्य
3. श्री अशोक शर्मा
4. श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति

आर्य मार्तण्ड वार्षिक शुल्क –	₹ 100/-
मासिक प्रकाशन सहयोगी –	₹ 3100/-
छः मासिक प्रकाशन सहयोगी –	₹ 5100/-
वार्षिक प्रकाशन सहयोगी –	₹ 11000/-

प्रकाशक

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान हनुमान ढाबे के पास,
राजापार्क, जयपुर –302004

0141-2621879, 9352547258

e-mail : aryamartand@gmail.com

e-mail : arya.sabha1896@gmail.com

अनुक्रम

- आर्य समाज की स्थापना – सम्पादकीय 04
- विक्रम सम्वत् ... – गगेन्द्र आर्य 05
- उपनिषद् गंगा – आचार्य सत्येन्द्र आर्य 06
- रोजड़ शास्त्रार्थ – प्रो शत्रुञ्जय रावत 07
- आत्मा का स्वरूप – आचार्य सोमदेव आर्य 09
- प्रतिनिधि गतिविधि – सभा मंत्री 11
- राजस्थान में आर्य समाज... – आर्य समाज 12
- आर्य समाज – अधिवक्ता 13
- अन्य समाचार 14

यूको बैंक

खाता धारक का नाम :- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर

खाता संख्या :- 18830100010430

IFSC Code :- UCBA0001883

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री देवेन्द्र कुमार ने स्वामी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजापार्क जयपुर की ओर से वी.के. प्रिन्टर्स सुदर्शनपुरा जयपुर से मुद्रित कराई और आर्य प्रतिनिधि सभा राजापार्क जयपुर से प्रकाशित, सम्पादक–श्री देवेन्द्र कुमार।

आर्य समाज स्थापना दिवस

सम्पादकीय.............. एक युग था जब सम्पूर्ण भूमण्डल पर वैदिक राज्य था। वेदानुसार दिनचर्या, ऋतुचर्या व वर्णाश्रमों का पालन करने में लोग अपने जीवन की सफलता मानते थे। समाज अपनी–2 योग्यतानुसार चार वर्णों में विभक्त था। वर्णों का निर्धारण ऋषियों द्वारा किया जाता था। कहीं कोई अव्यवस्था होने पर राजा द्वारा नियमन किया जाता था एवं राजा का नियमन ऋषियों द्वारा किया जाता था। दोनों वर्ग एक दूसरे को नियन्त्रित करते हुए समाज को सुव्यवस्थित करने को यत्नशील रहते थे। ईश्वरीय ज्ञान वेद को अंग उपांग सहित सस्वर अर्थ समझने वाले अनेक ब्राह्मण इस भारत भूमि पर विद्यमान थे। जो परोपकार की भावना से वेद के यथार्थ ज्ञान को जन–जन में फैलाकर ज्ञान पिपासा को निवृत्त करते थे। कालान्तर में एश्वर्य वृद्धि से आए आलस्य, प्रमाद एवं अहंकार की वृत्ति ने धर्म के स्थान को अधर्म ने, ज्ञान के स्थान को अज्ञान ने ले लिया। वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्थाओं में शिथिलता आने लगी। ब्राह्मण एवं क्षत्रिय स्वार्थ एवं अहंकार के वश अपने–2 कर्तव्य को भूलकर निरंकुश होकर कार्य करने लगे। फलस्वरूप महाभारत का युद्ध हुआ जिससे भारतीय समाज पर बहुत ही विपरीत प्रभाव पड़ा। गुण–कर्म–स्वभाव के अनुसार नियत होने वाले वर्ण जन्मना होने लगे। शास्त्रों को ब्रह्मणों ने अपने ही अधीन कर लिया, अन्यों को ज्ञान विज्ञान से वंचित रखा। वेद ज्ञान के अभाव से ईश्वर के नाम पर अनेक प्रकार के आडम्बर, तन्त्र–मंत्र, जादू–टोना, भूत–प्रेत इन्यादि चला दिए जिससे जनता को लूटा जाने लगा। ऋषियों के नाम पर अनेक अवैदिक ग्रन्थ प्रचलित किए। गलत मान्यताओं को परोसकर क्षत्रियों को भी भीरु बनाकर कर्तव्य से विमुख कर दिया। सब ओर अज्ञान–अन्धकार का बोल बाला होने लगा।

ऐसे विकट समय में 19वीं शताब्दी में भारतवर्ष के मानचित्र पर दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रकाशित हुए जिन्होंने वेद को स्वतः प्रमाण एवं अन्य ग्रन्थों को परितः माना। वेद से विरुद्ध चाहे किसी ने भी क्यों ना लिखा हो तो प्रमाण कोटि से बहिः है। जिन्होंने संसार को "वेदों की ओर लौटो" का उद्घोष किया। सम्पूर्ण भारतवर्ष में जगह –2 घूम–घूमकर वैदिक सिद्धान्तों का निर्भीकता से प्रचार–प्रसार किया। अवैदिक मत पन्थों के गढ़ को तीव्र गति से ध्वस्त करते हुए वैदिक मत स्थापित किया। हजारों–लाखों की संख्या वैदिक मत को स्वीकार करने लगी तदानुकूल आचरण होने लगा। लेकिन ये वैदिक सिद्धान्त अग्रिम पीढ़ी तक पहुँचे इसके लिए संगठनात्मक रूप से कार्य की आवश्यकता थी जो कि स्वामी जी के जीवन के बाद भी चलता रहे। स्वामी जी ने ऐसा विचार करते हुए चैत्र शुक्ल प्रतिप्रदा सन् विक्रम सम्वत् 1931 में बम्बई महानगर में आर्य समाज काकड़बाड़ी की स्थापना की। यह संगठन स्वामी दयानन्द के निर्देश में सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपनी पहचान बनाने लगा। स्वामी दयानन्द के बाद भी आर्य समाज के दीवानों ने वैदिक रथ को गतिशील रखा एवं समाज से छुआ–छूत, बाल–विवाह, सतीप्रथा, अन्धविश्वास, गुरुडम के प्रति जागरुक किया एवं वैदिक मान्यताओं से इतर मान्यता वालों से शास्त्रार्थ के माध्यम से वैदिक मत स्थापित किया। आज आर्य समाज स्थापना दिवस पर पुनः हम ऋषि के संकल्पों का स्मरण करते हुए अपने जीवन को उत्साहमय बनाकर ऋषि उद्देश्य को पूर्ण करने में यथा सामर्थ्य योगदान देवें।

आचार्य रवि शंकर आर्य

विक्रम सम्वत् 2077 – नूतनवर्षाभिनन्दनम्

सृष्टेः आदिदिवसः– चैत्रमासस्य शुक्लपक्षस्य प्रतिपत्तिथौ सूर्योदये ईश्वरेण जगतः रचना प्रारब्धा। अतः सृष्टिसम्वत् कारणात् वर्ष प्रतिपदायाः उत्सवः केवलम् भारतवासिनां अथवा हिन्दूनाम् एव नास्ति अपितु सम्पूर्णविश्वस्य तथा समस्तमानवीयसृष्टेः संवत्सरः वर्तते । यतो हि अयं सम्पूर्णब्रह्माण्डस्य नववर्षागमनस्य सूचकः अस्ति। सृष्टिसंवत्सर– 1,96,08,53,122 वर्षः आरभते।

भगवतः श्रीरामस्य राज्य अभिषेकः– त्रेतायुगे वनवासकालान्तिमसमये श्रीरामः रावणं हत्वा लंकायाः नरेशरूपेण विभीषणस्य राज्याभिषेकं कृत्वा पुनः अयोध्याम् आगत्य राजा अभूत्।

मर्यादापुरूषोत्तमस्य दशरथनन्दनस्य श्रीरामचन्द्रस्य राज्याभिषेकस्य मंगलतिथिः अपि चैत्रशुक्लप्रतिपदा एवासीत्। तदैव मंगलमयमुत्सवं स्मृत्य वयं स्वगृहाणां द्वारेषु अभिनन्दनफलकानि ध्वजांश्च स्थापयामः।

महाराजयुधिष्ठिरस्य संवत् – द्वापरयुगस्यान्ते महाभारतस्य युद्धानन्तरं धर्मराजः युधिष्ठिरः धर्मराज्यस्य स्थापनामकरोत्। तद्दिवसः अपि प्रतिपदा एव आसीत्।राजा युधिष्ठिरः यस्मिन् दिवसे राजसिंहासने उपविष्टः ततः युधिष्ठिरसंवत् प्रारब्धः। अतः चैत्रशुक्लप्रतिपदायाः दिवसः एक शुभकालः कस्यचिदपि कार्यस्य वर्तते ।

सृष्टिसंवत् युगाब्दः– अस्मिन् वर्षे अस्माकं नववर्षः खिस्ताब्दानुसारं 25मार्च, 2020(बुधवासरे) चैत्रशुक्लप्रतिपदा प्रारभते। द्वापरयुगस्य समाप्तेरनन्तरं कलियुगस्य प्रारम्भः जातः। तस्य युगाब्दरूपेण गणना भवति। वर्षप्रतिपदावसरे 5122 तमः वर्षस्य प्रारम्भः भविष्यति।

सम्राट्विक्रमादित्यस्य विजयदिवसः– नववर्ष प्रतिपदा मंगलमयोत्सव माधुर्यपूर्णः उल्लासप्रदः वर्तते।अस्माकं गौरवशालि–इतिहासे अनेके महापुरूषाः अभवन्। तेषु स्वर्णयुगप्रणेता, हूणशकप्रभृतिदुष्टदलविजेता, नवसंवत्संस्थापकः धर्मरक्षकः प्रजावत्सलः सम्राट् श्रेष्ठवीरः नृपः विक्रमादित्यः अभवत्। महाराजा विक्रमादित्यः अभवत्।महाराजा विक्रमादित्यः दुःखभंजकः, न्यायादर्शः अमिततेजस्वी, महाप्रतापी आसीत्।यस्मिन् दिवसे विक्रमादित्यः राजसिंहासने उपविष्टः तस्मात् दिवसात् विक्रमसंवत् प्रारब्धः। यस्य 2077 तमः वर्षः वर्षप्रतिपदादिवसात् भविष्यति। एषमः वर्षस्यास्य 'प्रमादी' इति नाम वर्तते।

आर्य समाज स्थापना दिवसः– समाजसुधारकः युगद्रष्टा महर्षि दयानन्दसरस्वती स्ववैचारिक आन्दोलनस्य संगठनात्मकं स्वरूपं दृढीकर्त्तुंभक्तानां सदाग्रहेण 7 अप्रेल सन् 1875 अर्थात् वर्षप्रतिपदादिवसे यज्ञपश्चात् 100 सदस्यैः सह आर्यसमाजस्य विधिवत्स्थापनां मुम्बईनगरे कृतवान्। मुम्बई स्थिते गिरगांवस्थिनायां माणिकमहोदयस्य वाटिकायां अद्य दिवसात् प्रायशः चतुर्दशदशकं पूर्वं स्थापितस्य आर्यसमाजस्य शाखाः देशे–विदेशेषु कोणे–कोणे प्रसारिताः। स्वामी दयानन्दः वेदानाम् तर्कसंगतां व्याख्यां प्रस्तुत्य 'सत्यार्थप्रकाशः' प्रसिद्धग्रन्थस्य रचनां कृतवान्। एवं वर्षप्रतिपदायाः पर्वणो गौरवतालिकायाम् आर्यसमाजस्य स्वर्णिम– अध्यायः अपि आरब्धः। अस्मिन् दिवसे झूलेलालस्य डॉ हेडगेवारस्य च जन्मदिवसः अपि अस्ति।

गगेन्द्रसिंह आर्य
(प्रांतीय महामंत्री– आर्य वीर दल राजस्थान)

कोरोना वायरस महामारी के कारण केन्द्र व राज्य सरकार के निर्देशानुसार –

1. प्रतिवर्ष होने वाले नवसंवत्सर आर्य समाज स्थापना दिवस पर 51 कुण्डीय महायज्ञ जो कि मानसरोवर जयपुर में होने वाला था स्थगित कर दिया गया है।
2. बगरु में झालानी परिवार द्वारा आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ भी स्थगित कर दिया गया है।

''कठोपनिषद्–2''

तं ह कुमारं सन्तं दक्षिणासु।
नीयमानसु श्रद्धाऽऽविवेश सोऽमन्यत।।२।।

अर्थ :– ब्राह्मणों के द्वारा दक्षिणा में ले जाई जाती हुई गायों में (दुर्बल गायों को देखकर) उस नचिकेता को सत्य के प्रति जानने की जिज्ञासा अनुभव हुई, उसके हृदय में श्रद्धा ने प्रवेश किया, वह विचारने लगा था उसने मनन किया।

व्याख्या :– जिज्ञासा जीव का स्वभाव है, जिज्ञासा सत्य को खोजने की एक निर्दोष प्रक्रिया है आत्मा को पहचानने का एक अवसर है इसलिए जो जिज्ञासा करता है–कुछ सीखने की, कुछ नया पाने की वही जीवन के असली उद्देश्य को समझ सकता है। वही नकली और असली जीवन में भेद कर सकता है, जिज्ञासा जीवन का प्राण है, यह जीवन के रुपान्तरण का प्रश्न है। हर एक आदमी की अपनी अलग–अलग ढंग की जिज्ञासाएं होती हैं, अनुत्तरित प्रश्न होते हैं। जिनका समाधान खोजने की कोशिश सदा जारी रखता है। जिज्ञासाओं से भरे प्रश्न मानव मस्तिष्क में किसी भी विषय क्षेत्र से जुड़े हुए हो सकते हैं, जिस किसी भी विषय को हम दृश्य या काव्य से जानने समझने का प्रयास करते हैं।

बालक नचिकेता का मन भी इससे अछूता न था वह उस दिन के दृश्य को देखकर विचलित हो उठा, विचलित होना स्वाभाविक था जो कुछ दिया जा रहा था उससे वह सन्तुष्ट न था क्योंकि दान में दाता–ग्रहीता का भला न दिख रहा था, उसकी नजर में यह कोई बुद्धिमानों जैसा कार्य न था। बुद्धिमान् की पहचान उसकी कसौटी उसके क्रियावान आचरण से ही परखी जा सकती है। बुद्धिमान् का कार्य यदि बुद्धिमत्ता पूर्ण न हुआ तो उसे बुद्धिमान् कहने में झिझक पैदा होगी। कुमार का हृदय सत्य को जानने या सत्य को धारण की इच्छा से व्यग्र हो उठा। बहुत प्रतिभाशाली बालक था वह जो बचपन से ही सत्य का द्वार खोलने की कोशिश कर रहा था। जिस यज्ञ से अविद्या की ग्रन्थियाँ ढीली पड़ने लगें, आत्मोत्थान की झलक दिखाई पड़े ऐसा यज्ञ सफल यज्ञ माना जा सकता है। यह यज्ञ, यज्ञ तो है लेकिन पूर्ण यज्ञ नहीं। पूर्ण यज्ञ उसे ही कहा जाता है यजमान की सफलता उसी यज्ञ में है जिसमें त्याग और दक्षिणा का समावेश है नचिकेता का पिता श्रेष्ठ त्याग और दक्षिणा के बिना ही सांसारिक बन्धनों से छूटने का स्वप्न ले रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि निन्दित त्याग और दान से जहाँ वह है वहाँ से भी नीचे गिर जायेगा, मोक्ष की बात तो बहुत दूर है। वह त्यागी था लेकिन श्रेष्ठ त्यागी नहीं। दानी था लेकिन उत्तम दानी नहीं वह विद्वानों का सत्कार तो कर रहा था लेकिन ऐसा सत्कार किस काम का जो अशान्ति का कारण बन जाये ऐसी संगति से क्या लाभ जो कुसंगति में बदल जाये। शास्त्र कहते हैं कि यदि यज्ञ में दक्षिणा को महत्व नहीं दिया गया तो वह यज्ञ ऐसा ही है जैसे प्रज्वलित हुई अग्नि में घी के स्थान में पानी डाल देना, पानी डाल देने से यज्ञाग्नि प्रज्वलित न होकर के बुझ जायेगी। अग्नि की कान्ति चमक तेज खत्म होते देर न लगेगी। इसलिए शास्त्र का कहना ''दक्षिणा यजमानस्य पत्नी'' दक्षिणा ही यजमान की रक्षा करती है अर्थात् ठीक प्रकार से दक्षिणा आदि दान देने पर यज्ञ मानो अध्वर का रूप धारण कर लेता है यज्ञ में हिंसा ईर्ष्या आदि दुर्भावनाओं का जागरण नहीं हो पाता अन्यथा यज्ञ विघ्न निवारक न होकर विघ्नों उपद्रवों को पैदा कर देता है। विभिन्न प्रकार के कर्मकाण्ड और यज्ञ दो प्रकार के प्रयोजनों को लेकर ही किये जाते हैं। पर्यावरण की शुद्धता एवं आध्यात्मिक शक्तियों का जागरण। जिस यज्ञ में इन दोनो उद्देश्यों का ध्यान न रखकर केवल धनार्थ प्रयोजन होता है वह यज्ञ हिंसामय होता है। इस प्रकार नचिकेता ने अपने पिता को अपूर्ण यज्ञानुष्ठान करते देखा और आश्चर्य हुआ कि मेरे पिता इतने ज्ञानी होकर भी ऐसी गौ ब्राह्मणों को दान में दे रहे हैं जो किसी भी प्रकार दान देने योग्य नहीं दिखतीं।

आचार्य सत्येन्द्र आर्य

रोजड़ शास्त्रार्थ – आधिकारिक वक्तव्य

विषय :– आर्य समाज की ध्यान उपसना पद्धति में ईश्वर का चिंतन/विचार करना चाहिए (करना उचित है) या नहीं।

दिनांक :– 11–12 फरवरी 2020 स्थान :– वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात), भारत

इस शास्त्रार्थ के प्रथम पक्ष का प्रतिनिधित्व आचार्य सत्यजित् जी तथा आचार्य आनन्दप्रकाश जी ने किया। द्वितीय पक्ष का प्रतिनिधित्व डॉ. हरिचन्द्र जी ने किया जो अमेरिका के ग्रेटर ह्यूस्टन में संचालित आर्य समाज से हैं।

शास्त्रार्थ के लिए दोनों पक्षों के प्रतिज्ञा वाक्य निम्नलिखित थे :–

1. प्रथम पक्ष का प्रतिज्ञा वाक्य :– आर्य समाज की ध्यान–उपसना पद्धति में ईश्वर का चिंतन/विचार करना चाहिए (करना उचित है)।

2. द्वितीय पक्ष का प्रतिज्ञा वाक्य :– आर्य समाज की ध्यान–उपसना पद्धति में ईश्वर का चिंतन /विचार नहीं करना चाहिए (करना उचित नहीं है)।

निर्णायक मण्डल के प्रमुख सदस्य आचार्य रवीन्द्र जी, आचार्य डॉ. रूपचन्द्र दीपक जी, डॉ. सतीश शर्मा जी, डा. वी रामानाथन जी और श्री प्रभात नायक जी थे। इन सम्मानित सदस्यों का चयन दोनों पक्षों की स्वीकृति के आधार पर किया गया था। निर्णायक मण्डल के सदस्यों ने सर्वसम्मति से आचार्य रवीन्द्र जी को निर्णायक मण्डल का अध्यक्ष चुना। अध्यक्ष ने शास्त्रार्थ को सुचारु रूप से निष्पक्षतापूर्वक संचालन कर सम्पन्न करवाया।

इस शास्त्रार्थ की प्रक्रिया में प्रमुख रूप से वेद, वैदिक दर्शन, उपनिषद् आदि के साथ–साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा प्रमाणित तथा उनके द्वारा लिखित ग्रन्थ जैसे सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्योद्देश्यरत्नमाला, संस्कारविधि आदि दोनों पक्षों द्वारा स्वीकृत ग्रन्थों को दोनों पक्षों द्वारा स्वपक्ष के मण्डन तथा परपक्ष के खण्डन के लिए प्रमाणों के रूप में प्रस्तुत किया गया, साथ ही तर्क हेतु ऊहा व लौकिक दृष्टान्तों को भी संवाद में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया।

दो दिन चला यह शास्त्रार्थ प्रातः सायं और रात्रिकालीन तीन सत्रों में विभाजित था जिनमें प्रतिदिन लगभग सात सात घण्टे चले इस संवाद में दोनों पक्षों के वक्ताओं ने पूर्वोक्त ग्रन्थों से स्वपक्ष के मण्डन तथा परपक्ष के खण्डन के लिये बड़ी शालीनता, बुद्धिमत्ता व धैर्य के साथ अपने अपने तर्क, हेतु उक्तियाँ आदि निर्णायकों व प्रबुद्ध श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किये।

शास्त्रार्थ की प्रक्रिया के प्रारम्भिक चरण में दोनों पक्षों द्वारा अपने अपने प्रतिज्ञा वाक्यों के कथन उपरान्त अपने अपने पक्ष की पुष्टि के लिए शास्त्रीय प्रमाण प्रस्तुत किये गये। तदनन्तर प्रतिपक्ष तथा निर्णायक मण्डल के सदस्यों के द्वारा दोनों पक्षों के प्रस्तोताओं से अपेक्षित स्थलों पर स्पष्टीकरण और परिभाषाएं मांगी गयीं, अगले चरणों में, दोनों पक्षों ने परपक्ष के द्वारा प्रस्तुत प्रमाणों के खण्डन तथा स्वपक्ष के मण्डन में शास्त्रीय प्रमाण तथा स्पष्टीकरण दिये। ये प्रक्रिया कई बार दोहरायी गई। इसके बाद शास्त्रार्थ में हुई चर्चाओं के आधार पर दोनों पक्षों को अपने प्रतिज्ञा वाक्यों को परिमार्जित करने का अवसर दिया गया। प्रथम पक्ष ने अपने प्रतिज्ञा वाक्य में कोई परिवर्तन नहीं किया जबकि द्वितीय पक्ष ने अपने प्रतिज्ञा वाक्य को परिमार्जित करके निम्न रूप में प्रस्तुत किया।

आर्य समाज की ध्यान–उपसना पद्धति में ईश्वर के चिंतन/विचार के उपरान्त ओंकार जप के माध्यम से परमेश्वर के आनन्दस्वरूप भाव में मग्न होना चाहिए।

अगले चरण में उपस्थित विद्वानों में से कुछ को शास्त्रार्थ के विषय पर अपना मत रखने का अवसर दिया गया। इस चरण में आचार्या शीतल जी, रोजड़, स्वामी मुक्तानन्द परिव्राजक जी, रोजड़, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी, होशंगाबाद, पण्डित रामचन्द्र जी, सोनीपत, श्री

रामस्वरूप रक्षक जी, अजमेर तथा सुश्री कंचन आर्या जी, दिल्ली ने अपने अपने विचार व्यक्त किये।

शास्त्रार्थ के अन्त में निर्णायक मण्डल के सभी सदस्यों, सहयोगी सदस्यों व संयोजक के द्वारा शास्त्रार्थ से सम्बन्धित दोनों पक्षों की प्रस्तुतियों के आधार पर निकलकर आये निष्कर्ष को सबके समक्ष प्रस्तुत किया गया। निर्णायक मण्डल के अनुसार इस शास्त्रार्थ का सारांश निम्नलिखित है :–

1. प्रथम पक्ष अपनी प्रतिज्ञा को सप्रमाण कर पाया।
2. प्रथम पक्ष द्वितीय पक्ष की आपत्तियों का सन्तोषजनक रूप से निराकरण कर पाया।
3. द्वितीय पक्ष का परिमार्जित प्रतिज्ञा वाक्य प्रथम पक्ष के प्रतिज्ञा वाक्य का अविरोधी पाया गया।
4. प्रथम पक्ष के द्वारा अपने पक्ष की पुष्टि में प्रचुर शास्त्रीय प्रमाण देने से उसे उचित माना गया।

उपर्युक्त सभी बिन्दुओं के आधार पर प्रथम पक्ष को निर्विरोध रूप से स्वीकार किया गया, द्वितीय पक्ष के पूर्व प्रतिज्ञा वाक्य को अस्वीकृत माना गया तथा द्वितीय पक्ष का परिमार्जित प्रतिज्ञा वाक्य प्रथम पक्ष के प्रतिज्ञा वाक्य का अविरोधी माना गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नवाल और गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री तथा आर्यवन विकास ट्रस्ट के उपप्रधान श्री रतनशी भाई वेलाणी ने अपने मन्तव्य रखे तथा पूरी प्रक्रिया पर सन्तोष व्यक्त किया।

इस संवाद के संयोजक श्री प्रो शत्रुञ्जय रावत ने दोनों पक्षों वक्ताओं, निर्णायक मण्डल, उपस्थित आर्यजन एवं वानप्रस्थ साधक आश्रम का शास्त्रार्थ में सहयोग के लिए धन्यवाद प्रकट किया। उपस्थित सभी आर्यजनों ने शास्त्रार्थ व संवाद की इस प्रक्रिया को बहुत सराहा और भविष्य में भी मतभेदों को सुलझाने की दिशा में आगे बढ़ने के लिए इसे महत्वपूर्ण कदम माना।

प्रो शत्रुञ्जय रावत

आर्य समाज द्वारा कोरोना वायरस के निवारणार्थ आयुर्वेद काढ़े का वितरण

यज्ञ समिति रामनगर, सोडाला द्वारा दिनांक 16 मार्च 2020 को कोरोना वायरस के निवारणार्थ ''आयुर्वेदिक काढ़ा'' सार्वजनिक रूप से लगभग 15000 लोगों को पिलाया गया। लोगो ने इस आयुर्वेदिक औषधि का सेवन कर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। इस कार्यक्रम का आयोजन डॉ. कृष्ण पाल सिंह, राजेन्द्र आर्य, रोशन आर्य, चन्द्रभान सिंह चौहान आदि के सहयोग से किया गया।

आर्य समाज मानसरोवर द्वारा 17 मार्च 2020 किरण पथ के पास मित्तल बुक डिपो के सामने आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाने का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमे हजारों राहगीरों ने कोरोना वायरस से बचाव के लिये आयुर्वेदिक काढ़े का सेवन किया। इस कार्यक्रम में डॉ. कृष्ण पाल सिंह, राजेन्द्र आर्य, शशांक आर्य, सतीश मित्तल, सुधा मित्तल आदि ने भाग लिया।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का साधारण सभा का अधिवेशन दिनांक 29/03/2020 को आहूत किया गया था। देश में कोरोना (कोविड–19) के प्रकोप को दृष्टिगत रखते हुए तथा राजस्थान सरकार से प्राप्त निर्देशानुसार यह अधिवेशन स्थगित किया जाता है। इस अधिवेशन की आगामी तारीख की सूचना यथा समय समस्त सदस्यों को प्रेषित कर दी जायेगी।

आत्मा का स्वरूप

जब से सृष्टि का निर्माण हुआ है तब से ही मनुष्य ने विभिन्न रहस्यों को खोज डाला। जीवन में अधिक सुखदायी, सुविधा देने वाली वस्तुओं को खोजा। यूं कहें आज का मनुष्य भौतिकता की चरमसीमा तक पहुँचने के लिए खोज में लगा हुआ है। आज के मानव में और हजारों वर्ष पूर्व के मानव में भिन्नता, मौलिक भिन्नता यह है कि आज का मानव भौतिक खोज में लगा है और वैदिक काल का मानव अध्यात्म की खोज में लगा हुआ था। वैदिक काल का मानव भौतिकता की अवहेलना न करते हुए अध्यात्म को खोज रहा था। आज अध्यात्म को सर्वथा छोड़कर भौतिक खोज की जा रही है। बिना अध्यात्म के भौतिकता शान्ति, प्रसन्नता न देकर अशांति और चंचलता ही प्रदान करेगी।

हमारे ऋषि महर्षियों ने आत्मा को जानकर परमेश्वर को जाना। आत्मा व परमेश्वर के विशुद्ध स्वरुप को जाना। जिन साधारण मनुष्यों ने ऋषियों का अनुकरण करते हुए आत्मा परमात्मा के स्वरूप को जानने का श्रम किया, उनको भी उनके श्रम व ज्ञान के अनुसार ऋषियों जैसी अनुभूति हुई और जिन्होंने ऋषियों की मान्यताओं को छोड़ अपनी अल्प बुद्धि लगाई वे आत्मा परमात्मा के विशुद्ध स्वरूप को न जानकर अपनी विपरीप कल्पनाएं इनके विषय में कर लेते हैं। परमेश्वर को जानने से पहले अपने आपको अर्थात् आत्मा को जानना अति आवश्यक है। आत्म तत्व क्या है, क्या इसका स्वरूप है इसके लिए हमारे ऋषियों ने वैदिक मान्यतानुसार जो परमेश्वर के अनुग्रह से जाना वह सभी मनुष्यों के कल्याणार्थ अपने शास्त्रों में वर्णन कर दिया है।

हम यहाँ पर जैसा वैदिक मान्यता में आत्मा का स्वरूप कहा वैसा लिखते हैं –

1. आत्मा अनादि है। जैसे परमेश्वर और मूल प्रकृति अनादि है वैसे ही आत्मा भी अनादि है। इसका आदि प्रारम्भ कहाँ से हुआ यह कहा नहीं जा सकता। अनादि उसको कहते हैं जिसका कभी प्रारम्भ न हुआ हो। जैसे परमेश्वर सदा से अनादि है वैसे आत्मा भी सदा से अनादि है।

2. आत्मा अल्पज्ञ है। परमेश्वर, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सबको जानने वाले हैं, आत्मा ऐसा नहीं है। आत्मा के पास जो ज्ञान है वह सब अन्य के द्वारा प्राप्त है। परमेश्वर के सानिध्य से आत्मा बहुत सारा शुद्ध ज्ञान प्राप्त करता है किन्तु फिर भी अल्पज्ञ ही रहता है।

3. आत्मा एकदेशीय है। परमात्मा सर्वव्यापक है, सर्वत्र विद्यमान है किन्तु आत्मा एकदेशीय ही है।

4. आत्माएं संख्या में अनन्त जैसी हैं। आधुनिक वैज्ञानिकों का कहना है कि पृथिवी के एक वर्ग किलोमीटर में लगभग सात अरब जीव रहते हैं। सभी छोटे–बड़े जीव मिलाकर यह गणना वैज्ञानिकों ने की है। जब एक वर्ग किमी में सात अरब जीव हैं। तो समस्त पृथिवी पर कितने जीव होंगे कल्पना करके देखें और पूरे ब्रह्माण्ड के जीव कितने होंगे यह हमारी कल्पना से बाहर जायेगा।

5. जीवात्मा शरीर धारण करता है। परमेश्वर कभी शरीर धारण नहीं करते । परमात्मा अपने सभी कार्य बिना शरीर धारण किये, बिना किसी की सहायता लिए करते हैं। किन्तु आत्मा बिना शरीर के संसार में कुछ भी कार्य नहीं कर सकता। इसको कार्य करने के लिए शरीर की आवश्यकता पड़ती है।

6. आत्मा कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र है।

7. आत्मा निराकार है।

जो वस्तु अनेक अवयवों से मिलकर बनी हो और जिसमें रूप गुण हो उसको साकार कहेंगे, अर्थात् जो आँखों से दिखाई देवे वह साकार कहलाता है। इस परिभाषा के अनुसार न तो आत्मा अनेक अवयवों से मिलकर बना है, न ही रूप गुण उसमें और न ही आँखों से दिखाई देता है। इसलिए आत्मा निराकार है। यदि साकार की परिभाषा यह करें कि जो–जो इन्द्रियों से प्रतीत होवे वह–वह साकार। इस परिभाषा अनुसार भी आत्मा निराकार ही सिद्ध होवेगा क्योंकि आत्मा रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द आदि इन्द्रियों के विषयों से परे है और यदि साकार की परिभाषा यह ली जाये कि जो–जो प्रकृति से बना है वह वह साकार तो भी आत्मा निराकार ही सिद्ध होगा। कुछ आत्मा के निराकार होने पर आक्षेप करते हैं कि निराकार परमात्मा निराकार आत्मा में कैसे रह सकता है। यह कथन आक्षेप करने वालों की बालबुद्धि को ही दर्शाता है। जब साकार वस्तुएं एकदेशीय होते हुए निराकार परमात्मा में रहती हैं तो एक देशीय निराकार आत्मा क्यों नहीं रह सकता अर्थात् निराकार आत्मा एक

देशीय है और एक देशीय पदार्थ निराकार परमेश्वर में रहता है रह सकता है।

अब आत्मा के निराकार होने में महर्षि दयानन्द के प्रमाणों को देखिए–

1. यच्चेतनवत्वं तज्जीवत्वम्। जीवस्तु खलु चेतनस्वभावः।

अस्येच्छदयो धर्म्मास्तु निराकारोऽविनाश्यनादिश्च वर्तन्ते।

जो चेतन है वह जीव है और जीव का चेतना ही स्वभाव है उसके इच्छा आदि धर्म हैं तथा वह भी निराकार और नाश से रहित रहता है। (म. द. स. का पत्र व्यवहार भाग 1, सम्पादक डॉ. वेदपाल मेरठ, प्रकाशक परोपकारिणी सभा अजमेर)

2. 16.3 बदला दिये जावेंगे कर्मानुसार। और प्याले हैं भरे हुए।

जिस दिन खड़े होंगे रूह और फरिश्ते सब बांधकर। म. 7 | सि. 30 | सू 78 | आ. 26 |34 |38

समीक्षा यदि कर्मानुसार फल ..... और रूह निराकार होने से खड़ी क्योंकर हो सकेगी। (स.प्र.सम. 14। द.ग्र.मा. भाग एक संस्करण 129वां बलिदान समारोह 2012) प्रकाशक परोपकारिणी सभा अजमेर ये दो प्रमाण महर्षि के ग्रन्थों से हैं। अगले दो प्रमाण उनके प्रवचनों के संग्रह से हैं–

1. इसी प्रकार भक्तों की उपासना के लिए ईश्वर का कुछ आकार होना चाहिए, ऐसा भी कुछ लोग कहते हैं, परन्तु यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि शरीर स्थित जो जीव हैं, वह भी आकार रहित हैं .... | देखें पू. प्र. व्याख्यान एक।

2. मूर्त पदार्थों के बिना ध्यान कैसे बनेगा? उत्तर :– शब्द का आकार नही तो भी आकाश का ज्ञान करने में आता है वा नहीं? जीव का आकार नही तो भी जीव का ध्यान आता है वा नहीं .... | पूना प्रवचन व्या. 4

महर्षि के इन प्रमाणों से आत्मा निराकार सिद्ध हो रहा है। हमें महर्षि के कथन को प्रमाण मानना चाहिए न कि किसी लौकिक मनुष्य की बात को।

आचार्य सोमदेव आर्य
स्वामी आत्मानन्द वैदिक गुरुकुल
मलारना चौड़, सवाई माधोपुर, राज.

आर्य समाज तथा आर्यवीर दल द्वारा बयाना, हिंडौन सिटी, गंगापुर सिटी में भारतीय नवसंवत्सर पर्व पर दीप प्रज्ज्वलन अभियान

आर्य समाज तथा आर्यवीर दल बयाना, हिंडौन सिटी एवं गंगापुर सिटी के पदाधिकारियों की बैठक रखी गई। बैठक में आर्य समाज के नेतृत्व में भारतीय संस्कृति के उत्थान हेतु नव संवत्सर पर्व मनाने के लिए विचार किया गया। बैठक में निर्णय लिया गया कि आर्य समाज व आर्यवीर दल के संयुक्त तत्वावधान में जन जागृति अभियान चलाया जाएगा। इस अभियान को मेरी संस्कृति–मेरा स्वाभिमान नाम दिया गया है। इस अभियान के माध्यम से नगर स्तर पर आर्यवीरों व आर्यजनों द्वारा घर–घर जाकर जनता को भारतीय संस्कृति पर आधारित नववर्ष मनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा। इस कार्यक्रम के प्रचार के लिए घरों व बाजारों में इस अभियान सम्बन्धी फलेक्स–बैनरों को भी लगाया जाएगा। साथ ही नववर्ष अर्थात चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तद्नुसार 25 मार्च 2020, बुधवार को रात्रि 7:30 से 8:30 बजे तक घरों, दुकानों व प्रतिष्ठानों पर 11 दीप जलाने के लिए प्रेरित किया जाएगा तथा भारतीय व पाश्चात्य नववर्ष के कैलेंडर सम्बंधी इतिहास की जानकारी के लिए लेख नववर्ष कब? क्यों? कैसे? प्रकाशित कर उसकी प्रतियाँ शहर भर में बाँटी जाएगी और 25 मार्च 2020, बुधवार को नव संवत्सर के दिन शहर के मुख्य चौराहों व बाजारों में तिलक कार्यक्रम रखा जाएगा। जिसमें सभी नगरवासियों के मस्तक पर तिलक लगा कर नववर्ष की शुभकामनाएं दी जाएगीं।

अंकुश आर्य
प्रान्तीय सहमंत्री–आर्यवीर दल राजस्थान

प्रतिनिधि गतिविधि (दौसा, कोटपूतली, बहरोड)

आर्य समाज दौसा :– महाशिवरात्रि के अवसर पर दिनांक 21 फरवरी को सभा के पदाधिकारी मंत्री–श्री देवेन्द्र शास्त्री, कोषाध्यक्ष–डॉ. सन्दीपन आर्य, आर्य युवा कार्यकर्ता श्री शशांक आर्य, श्री विनय आर्य, श्री राजेन्द्र आर्य, आर्य समाज दौसा पहुँचे, जहाँ ऋषि बोधोत्सव का कार्यक्रम हाऊसिंग वोर्ड कॉलोनी पार्क में रखा गया था। यज्ञ के पश्चात् श्री राजेन्द्र गुप्ता प्रधान, श्री पूरणमल आर्य उपप्रधान, रतिराम आर्य मंत्री ने ऋषि से सम्बन्धित विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर श्री सरदार सिंह गुर्जर सहित दौसा क्षेत्र के अनेक आर्यजन एवं महिलाएं उपस्थित रही। कार्यक्रम के पश्चात् सभा मंत्री देवेन्द्र शास्त्री एवं डॉ. सन्दीपन आर्य ने स्थानीय पदाधिकारियों के साथ कार्य विस्तार पर चर्चा की ज्ञात रहे आर्य समाज दौसा के पास वर्तमान में भवन नहीं है परन्तु यह आर्य समाज 1999 से आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान से विधिवत् पंजीकृत है, डॉ. सन्दीपन आर्य ने कहा कि आर्य समाज दौसा में आर्य समाज की गतिविधियाँ बढ़ाई जायेगी साथ ही बच्चों में संस्कार निर्माण हेतु आर्यवीर दल की गतिविधियाँ संचालित हेतु शिक्षक भेजा जायेगा। प्रचार कार्य हेतु शीघ्र ही दौसा में भजनोपदेशक के कार्यक्रम तय किए जायेंगे। सभा मंत्री श्री देवेन्द्र शास्त्री ने कहा कि आर्य समाज दौसा में भूखण्ड की व्यवस्था के लिए गुलाबपुरा, भीलवाड़ा की तर्ज अथवा अन्य विकल्पों पर विचार किया जायेगा।

आर्य समाज कोटपूतली, :– दिनांक 1 मार्च 2020 सभा के मंत्री श्री देवेन्द्र शास्त्री, श्री भँवर लाल चौधरी, श्री राजेन्द्र आर्य, श्री विनय जी झाँ, श्री सुभाष आर्य, श्री बंशीधर आर्य के साथ कोटपूतली पहुँचे। जहाँ यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति आचार्य सोमदेव जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुई। सभी सदस्यों ने कार्यक्रम में भाग लेने के बाद सभा पदाधिकारी, स्थानीय पदाधिकारी श्री रमेश आर्य के साथ आर्य भवन देखने हेतु गए जहाँ कभी आर्य समाज द्वारा निराश्रित बच्चों का गुरुकुल संचालित होता था, वर्तमान में इस परिसर के अधिकांश भाग पर भूमाफियाओं का अवैध कब्जा है जिसे मुक्त करवाने हेतु स्थानीय कार्यकारिणी विशेषरुप से श्री रमेश आर्य, अशोक आर्य, ब्रह्मदेव आर्य निरन्तर सक्रिय हैं। इस सम्बन्ध में आवश्यक कदम उठाने पर सभा मंत्री के साथ विचार विमर्श हुआ।

आर्य समाज बहरोड़ :– बहरोड तहसील में संचालित आर्य समाज जिसका भवन न होने के कारण अनेक वर्षों तक महाशय विष्णु जी वैदिक प्रचारक माँचल के बहरोड स्थित दुकानों के ऊपर बने भवन में आर्य समाज की गतिविधियाँ संचालित होती रही। महाशय विष्णु जी वैदिक प्रचारक एवं रामप्रसाद आर्य पूर्व सरपंच माँचल एवं रामानन्द आर्य आदि के प्रयासों एवं सहयोग से आर्य समाज हेतु भूखण्ड एवं उस पर भव्य भवन का निर्माण बहरोड 2012 में हो चुका है। भवन निर्माण के पश्चात् महाशय विष्णु आर्य वैदिक प्रचारक घर छोड़कर आर्य समाज बहरोड में निवास कर अपने प्रचार का केन्द्र इसी स्थान को बना चुके थे। वे घर–घर जाकर तथा विशेषकर शिक्षण संस्थाओं में जाकर यज्ञ तथा व्याख्यान करने का कार्य करते थे। दिनांक 28 फरवरी 2020 को 92 वर्ष की आयु में महाशय जी के निधन का समाचार आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की टीम को 1 मार्च 2020 को कोटपुतली में आर्य समाज बहरोड के प्रधान श्री रामानन्द आर्य द्वारा प्राप्त हुए। समाचार प्राप्त होते ही सभा के अधिकारी महाशय विष्णु आर्य के निवास आर्य फार्महाऊस माँचल बहरोड पहुँचकर अपनी श्रद्धान्जलि व्यक्त की। सभा मंत्री ने महाशय जी के दोनो पुत्र श्री रवि आर्य, अशोक आर्य से मिलकर सान्त्वना देते हुए उन्हें पिताजी के पदचिन्हों पर उनके कार्यों तथा संस्कारों को आगे बढ़ाने का आग्रह किया। तत्पश्चात् सभा पदाधिकारियों ने जयपुर हेतु प्रस्थान किया।

सभा मंत्री

बयाना–आर्य समाज बयाना में आर्य वीर दल स्थापना दिवस उत्साह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ से किया गया। तत्पश्चात् आर्य वीर दल अधिष्ठाता श्रीमान् परमसुख जी आर्य के निर्देशन में सर्वांग सुंदर व्यायाम, सूर्य नमस्कार,जिमनास्टिक, लाठी प्रदर्शन आदि कार्यक्रम आर्य वीरों तथा वीरांगनाओं द्वारा संपन्न कराए गए। अंत में पुरस्कार वितरण द्वारा बच्चों का उत्साहवर्धन किया गया।

वेदोद्धारक जगद्गुरु महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जयंती तथा दयानंद बोधोत्सव आर्य समाज बयाना में धूमधाम से मनाया गया। यज्ञ श्रीमती हेमलता जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में संपन्न हुआ। तत्पश्चात् महर्षि दयानंद से संबंधित प्रेरक प्रसंग, भजन आदि कार्यक्रम में बच्चों, महिलाओं व पुरुषों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

गंगापुर सिटी– आर्यवीर दल, गंगापुर सिटी द्वारा सार्वदेशिक आर्यवीर दल के स्थापना दिवस पर आर्य परिवार स्नेह मिलन समारोह का कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ दोपहर 3 बजे से खेलों की प्रतियोगिता से हुआ जिसमें जिसकी लाठी उसकी भैंस खेल में भरत जी, टीम अष्टा दौड़ में शैलेन्द्र जी तथा हेमराज जी की टीम तथा बुद्धि परीक्षण खेल में नीरज जी विजयी रहे। तत्पश्चात् महिलाओं की रूमाल झपट्टा तथा लड़कियों की चम्मच दौड़ रखी गई। जिसमें मेघा अग्रवाल प्रथम तथा साक्षी गुप्ता द्वितीय स्थान पर रही। प्रतियोगिता के बाद आर्यवीरो द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया। जिसमें भगवती नगर शाखा के आर्यवीरों द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर नाटक तथा मुख्य शाखा के आर्यवीरों द्वारा तेरी मिट्टी में मिल जावा गाने पर डांस किया गया। आशुतोष आर्य द्वारा संदेश आते है गीत गाया गया। कार्यक्रम में शुभम जी आर्य द्वारा म्यूजिकल फुटवाल खेल तथा गिरीश आर्य द्वारा वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कराई गई। कार्यक्रम में मंच संचालन सी.ए. अभिषेक बंसल द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन सहभोज द्वारा किया गया। कार्यक्रम में संजय आर्य, मनोज आर्य, दिलीप पगोंरिया, मोहित आर्य, ईश्वर आर्य, योगेन्द्र आर्य, नरेन्द्र आर्य, देवेन्द्र आर्य, सुनीता आर्या, सुमन आर्या, ऊषा आर्या, वन्दना देवी इत्यादि आर्य सज्जन उपस्थित थे।

उदयपुर :– आर्य समाज हिरण मगरी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर युवा कवियत्री अर्पिता मेनारिया व हर्षिता शर्मा ने नारी सशक्तिकरण से सराबोर काव्यपाठ कर पन्नाधाय, रानी लक्ष्मीबाई, हाडी रानी जैसी महान राष्ट्र भक्त वीरांगनाओं की तरह बनने की प्रेरणा दी।

मातृ शक्ति पर्व के आरंभ में यज्ञ के अनुष्ठान में आर्य बहनों ने भारतीय विदुषी गार्गी व मैत्रेयी की भांति आध्यात्मिकता को आत्मसात करने का संकल्प लिया।

आर्य समाज हिरण मगरी के मंत्री डॉ भूपेन्द्र शर्मा ने कहा कि मातृ शक्ति पर्व का यज्ञ, भजन, काव्य पाठ, प्रवचन, शांति पाठ व जयघोष का सम्पूर्ण अनुष्ठान आर्य बहनों द्वारा ही संपादित किया गया।

आर्य समाज शाहपुरा, भीलवाड़ा :– बदलते मौसम में सर्दी जुखाम, खाँसी आम बात है देश मे बुखार व कोरोना वायरस का प्रकोप भी धीरे–धीरे बढ़ता जा रहा है। इसकी जागरुकता व बचाव के लिए आर्य समाज शाहपुरा के तत्वावधान में पंचदिवसीय मेले में सोना टेक्सटाईल बड़ेसरा के सौजन्य से डॉ. कमलेश जी पाराशर के निर्देशानुसार निर्मित काढ़े का मूर्ति चौराहे पर निःशुल्क वितरण किया गया। साथ ही लघु वैदिक साहित्य का भी निःशुल्क वितरण किया गया एवं वैदिक चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। आर्य समाज के कोषाध्यक्ष चन्द्र प्रकाश झंवर, पूर्व मंत्री सत्यनारायण तोलम्बिया, राधेश्याम जीनगर एवं आर्य समाज के सभी सदस्य उपस्थित रहे।

आर्य समाज के विवाहों पर जनहित याचिका खारिज

मान्य राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा खण्डपीठ बन्दी प्रत्याक्षीकरण याचिका 151/2011 में दिनांक 16/11/2011 को आर्य विवाह पद्धति के दुरूपयोग में हिन्दु विवाह अधिनियम में विहित प्रावधानों के प्रतिकूल तथाकथित आर्य समाजों में सम्पन्न कराये जा रहे अवैध विवाहों के प्रति केवल मात्र धन संचय किए जाने की निहित लालसा से अवैध विवाहों के प्रति सामाजिक संरक्षणए पारिवारिक सोहार्द एवं आर्य विवाह पद्धति को संरक्षित किए जाने हेतु प्रदत्त दिशा निर्देशों को श्री ताराचन्द अग्रवाल द्वारा जनहित याचिका संख्या 18652/19 यह कहते हुए प्रस्तुत की थी कि मान्य न्यायलय के पूर्वोक्त दिशा निर्देशों के कारण राजस्थान राज्य में आर्य समाजों द्वारा आर्य विवाह पद्धति में विवाहों पर रोक के कारण राजस्थान राज्य के निवासियों को आर्य विवाह पद्धति से विवाह कराये जाने हेतु दूसरे प्रान्तों में जाना अत्यधिक कष्टकारी एवं श्रमसाध्य होकर मानवजीवन को संकटापन्न करने वाला है। अत मान्य न्यायालय जनहित को दृष्टिगत कर आर्य विवाह पद्धति से सम्पन्न होने वाले हिन्दु विवाह अधिनियम एवं विशेष विवाह अधिनियम के अन्तर्गत सम्पन्न कराये जाने वाले विवाहों को न रोकें।

आर्य विवाह पद्धति से सम्बंधित पूर्वोक्त जनहित याचिका में मान्य राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा नोटिस जारी किए जाने पर सामाचार पत्रों के माध्यम से आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान आर्य समाजों की नियामक एवं नियन्त्रक सस्था को जानकरी होने पर आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री जी द्वारा सभा के अधिवक्ता के माध्यम से कहा गया कि उक्त जनहित याचिका में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान हितनिहित आवश्यक पक्षकार हैं। आर्य विवाह पद्धति से सम्बन्धित प्रकरण में मान्य न्यायालय द्वारा पारित आदेश राजस्थान राज्य में स्थित समस्त आर्य समाजों पर प्रभावशील होगा। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को न्यायहित में सुना जाना अपरिहेय है को स्वीकारते हुए मान्य उच्च न्यायालय द्वारा उक्त याचिका में आवश्यक पक्षकार निर्मित कर प्रकरण को सुना गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उसके अधिवक्ता का कथन था कि मान्य न्यायलय का 16/11/2011 का आदेश हिन्दु विवाह अधिनियम में अधिनियमित वैवाहिक अपेक्षाओं की अवहेलना कर छलकपट पूर्वक कारित अवैध विवाहों को नियन्त्रित किया जाकर आर्य विवाह पद्धति एवं आर्य समाज की धूमिल होती छवि को संरक्षित किए जाने हेतु वैध रूप से पारित आदेश हैं आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिवक्ता का कथन था कि मान्य न्यायालय के 16/11/2011 आदेश के उपरान्त भी आर्य विवाह पद्धति समस्त राजस्थान राज्य में आज भी वैध विवाहों का सम्पादन आर्य पद्धति से हो रहा है आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिवक्ता द्वारा अपने कथन की पुष्टि में आर्य विवाह पद्धति से निष्पन्न हुए 2019 के अनेक विवाह प्रमाण पत्र भी प्रस्तुत किए मान्य उच्च न्यायालय द्वारा प्रदत्त दिशा निर्देश दिनांक 16/11/11 अवैध विवाहो से सम्बधित होने के कारण मान्य न्यायालय के पूर्वोक्त आदेश में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करते हुए उक्त आदेश को अन्तर्जातीय विवाहों के प्रतिकूल न होना अंकित कर ताराचन्द्र अग्रवाल द्वारा लागु की गई जनहित याचिका दिनांक 26/02/2020 को निरस्त किया जाना आदेशित किया।

अधिवक्ता

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

प्रान्त में आर्यवीर दल गतिविधि

प्रधान व्यायामशिक्षक भागचन्द आर्य तथा व्यायामशिक्षक मनोहर आर्य द्वारा संगठन के योजनानुसार जनवरी माह में दस दिवस प्रवास किया गया। बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, चितौड़गढ़, राजसमन्द, भीलवाड़ा, अजमेर में शाखा निरीक्षण, आर्यवीरों के साथ बैठक कर आगामी योजना निर्माण कर निर्देश दिये गए। श्रीगंगानगर के जिला संचालक राजूराम आर्य के आग्रह पर भागचन्द आर्य ने घड़साना में सात दिन तक प्रशिक्षण दिया। आर्य वीर दल राजस्थान के प्रान्तीय महामंत्री गगेन्द्र शास्त्री ने बताया कि स्थापना दिवस राजसमन्द, जैसलमेर,जयपुर, गंगापुर सिटी, फतेहनगर (उदयपुर), चोरवड़ी (चितौड़गढ़), चाम्पानेरी, अजमेर, पाली आदि स्थानों पर बौद्धिक, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता, यज्ञ, सत्संग, प्रवचन,व्यायाम प्रदर्शन,रक्तदान शिविर, शोभायात्रा आदि का हर्षोल्लासपूर्वक आयोजन किया गया।

भावपूर्ण स्मरण महाशय विष्णु आर्य वैदिक प्रचारक बहरोड़

श्री विष्णु जी आर्य का जन्म दिनांक 02 जनवरी 1938 को ग्राम माँचल तह बहरोड जिला अलवर राजस्थान के आर्य परिवार में हुआ, उनकी माता का नाम श्रीमती शान्ती देवी व पिताजी का नाम श्री जुगल किशोर था। उस समय जब ग्रामीण क्षेत्रो में पढ़ाने के प्रति ज्यादा जागरुकता नही थी उस समय श्री विष्णु आर्य जी के माता–पिता ने एम.ए.बीएड तक कि शिक्षा दिलवाई। उनका विवाह श्रीमती सरस्वती देवी के साथ हुआ था। वह एक बहुत ही कुशल एवं धार्मिक महिला थी। श्री विष्णु जी ने शिक्षा विभाग में अध्यापक के पद से नौकरी शुरू की एवं प्रधानाध्यापक के पद से सेवा निवृत्त हुये। उन्होंने अपने जीवन काल में आर्य समाज का प्रचार–प्रसार किया व उनके चार बच्चे दो पुत्र व दो पुत्रियाँ हुईं बच्चों को भी श्री आर्य जी ने अच्छी शिक्षा दिलवाई। स्वामी दयानन्द सरस्वती के मिशन को आगे बढ़ाने का कार्य किया। गाँवों के विद्यालयों में जाकर बच्चों व शिक्षकों से स्वामी दयानन्द सरस्वती के बताये मार्ग पर चलने की रोजाना शिक्षा देते थे। श्री विष्णु आर्य ने श्री रामप्रसाद जी आर्य संरपच माँचल को प्रेरित कर बहरोड़ में आर्य समाज बनाने हेतु जमीन देने के लिए प्रोत्साहित किया व आर्य समाज के लिए लोगों को जोड़कर लोगों के सहयोग से करीब एक करोड़ रूपये एकत्रित कर बहरोड में आर्य समाज का निर्माण 2012 में करवाया। चार वर्ष तक आर्य समाज बहरोड़ के प्रधान रहे, बहरोड तहसील अलवर जिला व आस पास पडोस के राठ क्षेत्र में भी आर्य समाज के लिए कार्य किया। उनका स्वर्गवास दिनांक 28 फरवरी 2020 को हुआ। श्री आर्य जी के पीछे भरा पूरा परिवार है। उन्होंने अपने जीवन में स्वामी दयानन्द सरस्वती के मिशन को बढावा दिया।

रामानन्द आर्य
प्रधान, आर्य समाज बहरोड़

गुरुकुल के लिये प्रवेश सूचना

महर्षि दयानन्द आर्ष संस्थान द्वारा संचालित आर्ष गुरुकुल एवं कृष्णा गोशाला आगरा–मथुरा राजमार्ग हिन्दुस्तान एवं ईशान इन्जीनियरिंग कॉलेज़ के बराबर से लगभग 4 किमी ग्राम दखोला के लिये वैदिक धर्म एवं आर्य समाजों के लिए उपदेशक तैयार करने हेतु प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेशार्थी की आयु 12 वर्ष से कम न हो। यहाँ आर्ष पद्धति से व्याकरण, दर्शन, महर्षि निर्दिष्ट पाठयक्रम के अध्यापन की व्यवस्था है। गुरुकुल में अध्यापन, भोजन एवं आवास की निःशुल्क व्यवस्था है। प्रवेश के लिए सम्पर्क सूत्र – 9760346512, 9719003853

आचार्य धमेन्द्र शास्त्री
गुरुकुल दखोला

विभिन्न गतिविधि

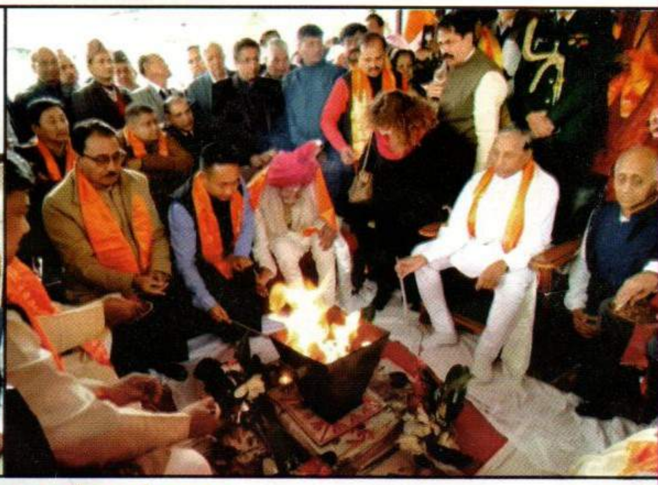

सिक्किम में आर्य समाज के बढ़ते कदम

यज्ञ समिति रामनगर, सोढाला एवं आर्य समाज मानसरोवर, जयपुर द्वारा हजारों राहगीरों को पिलाया आयुर्वेदिक काढ़ा

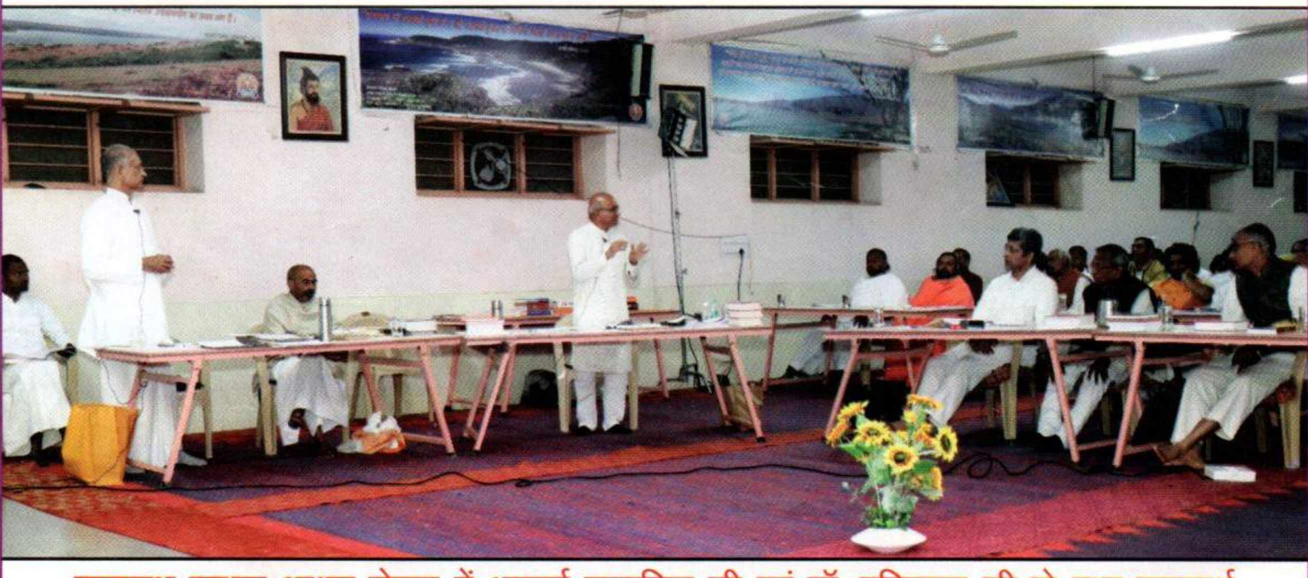

वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ में आचार्य सत्यजित् जी एवं डॉ. हरिश्चन्द्र जी के मध्य शास्त्रार्थ

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 214 / 2020-22 आर. एन. आई नं.10471/60

शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता के सुनहरे 100 साल

बेमिसाल

1919·CELEBRATING·2019
1919·शताब्दी उत्सव·2019

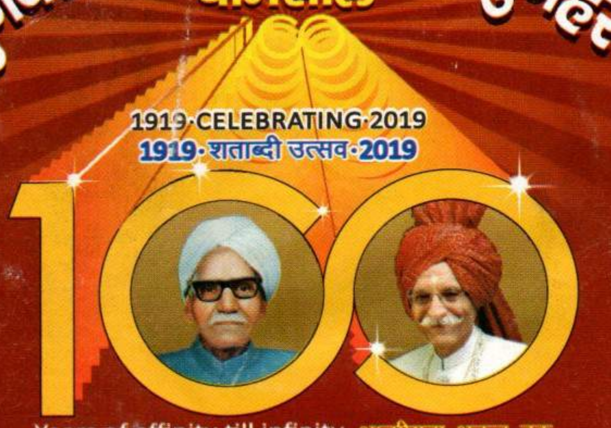

Years of affinity till infinity आत्मीयता अनन्त तक

MDH मसालों में 100 साल की शुद्धता के जश्न पर सभी ग्राहकों, वितरकों एवं शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई

विश्व प्रसिद्ध एमडीएच मसाले शुद्धता और गुणवत्ता की कसौटी पर खरे उतरे।

भारत सरकार द्वारा "ITID Quality Excellence Award" से सम्मानित किया गया।
यूरोप में मसालों की शुद्धता के लिए "Arch of Europe" प्रदान किया गया।
"Reader Digest Most Trusted Brand Platinum Award" भी प्रदान किया गया।

The Brand Trust Report ने वर्ष 2013 से 2019 तक लगातार 5 वर्षों के लिए ब्रांड एमडीएच को India's Most Trusted Masala Brand & India's Most Attractive Brand का स्थान दिया है।

MDH मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच–सच

भारत सरकार ने व्यापार और उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण (Trade & Industry, Food Processing) में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिनांक 16 मार्च, 2019 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में महाशय जी को भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी द्वारा पद्म भूषण सम्मान से अलंकृत किया गया।

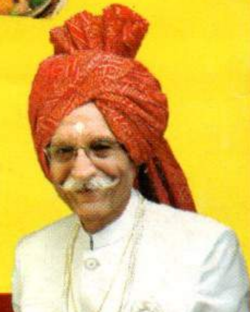

महाशय धर्मपाल जी
पद्मभूषण से सम्मानित

महाशय धर्मपाल जी ने सियालकोट (पाकिस्तान) से आकर कठिन परिस्थितियों और संघर्ष से अपने जीवन को संवारा है और बड़े पैमाने पर समाज और मानव जाति की सेवा के लिये
को समर्पित किया है
पर Mahashay

प्रेषकः-
सम्पादक,
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
हनुमान ढाबे के पास, राजा पार्क,
जयपुर-302004

श्री देवेन्द्र शास्त्री
पी –42 मुक्तानंद नगर, गोपालपुरा,
जयपुर 302018